खुदगर्जी की सियासत से बाहर निकलें नौकरशाह और सियासतमंद

आज बात करें आईएएस और विपक्ष में शक्ति प्रदर्शन की तो देखते हैं कि देश में नया दौर पावर का है। मगर नए जमाने में ब्रेन पावर से ज्यादा मनीपावर और मसल्सपावर की चर्चा ए आम है। अपना अस्तित्व कायम रखने और वर्चस्व बढ़ाने के लिए अधिकार संपन्न वर्ग शक्ति प्रदर्शन में लगा हुआ है। अफसोस कि पावरफुल तबके द्वारा यह नूराकुश्ती प्रदेश के अधिसंख्य पावरलेस लोगों को मजबूत करने के लिए नहीं बल्कि खुद को बीस साबित करने चल रही है। छत्तीसगढ़ में आईएएस और विपक्ष के बीच शक्तिपर्व पर यह जंग दुर्भाग्यजनक तरीके से दिलचस्प मोड़ पर पहुंच गई है। आईएएस गणेश शंकर मिश्रा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष भूपेश बघेल के बीच विधानसभा गैलरी में बहस हुई थी। अमर्यादित रुप से हुई, इस तू-तू मैं-मैं का मामला अब लोकतंत्र की गैलरी से निकलकर गांव के गलियारे से होते हुए मुख्यमंत्री तक पहुंच गया है। आईएएस एसोसिएशन ने मुख्यमंत्री से मिलकर सरकार का हुकुम बजाने की दुहाई देते हुए, आईएएस का रुतबा कायम रखने के लिए श्री बघेल से बचाने और कार्रवाई की गुहार की है। संकट के दौर से गुजर रही आईएएस लांबी अपनी गिरती साख, रसूख और छवि को लेकर चिंतित और सहमी हुई है, सो उसकी प्रदेश के मुखिया से अपना मनोबल बनाए रखने की गुहार उसके सोच के हिसाब से सोचनीय हो सकती है। इस पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष भूपेश बघेल ने फेसबुक पर तंज कसा है, कि मनोबल गिरने की शिकायत करने वाले अफसरों को बताना चाहिए कि प्रदेश में व्याप्त भ्रष्टाचार की अनदेखी करते हुए उनका मनोबल क्या उछल रहा है? नौकरशाही की भूमिका सेवक की है, और वे समझ लें कि लोकतंत्र में जनता से कोई ऊपर नहीं हो सकता। एक बात पता चल गई कि छत्तीसगढ़ में आईएस का मनोबल भी है। श्री बघेल और जल संसाधन सचिव जीएएस मिश्रा के बीच हुए विवाद और सोशल मीडिया में इसके पोस्ट को लेकर बहस मुबाहिसा शुरु हो गया है। दरअसल सभी सरकारों में लगातार सत्ता में बने रहने वाले ब्यूरोक्रेट्स विपक्ष के हमले से सहमे हुए हैं। संयोग से यह विवाद उस समय तूल पकड़ रहा है जब कैग ने तीस हजार करोड़ के घोटाले के मामले का खुलासा किया है, और सरकार इसे ठंडे बस्ते में डालने की तैयारी में जुटी हुई है। कांग्रेस नेता ने भ्रष्टाचार के टार्गेट में रही आईएस लांबी पर चोट कहते हुए उनकी शिकायत को भ्रष्टाचार के मामले से जोड़ दिया है। जाहिर है कैग के खुलासे की जांच होने पर भ्रष्टाचार से जुड़े ज्यादातर विभागों के गड़बड़झाले में कई आईएएस के साथ विभागीय मंत्री भी चपेट में आ सकते हैं। इस मामले का दिलचस्प पहलू यह है कि आईएसएस लॉबी पर विपक्ष तो दूर सत्तापक्ष के लोग ही प्रशासनिक आतंक का आरोप लगाते रहे हैं। आधा दर्जन वरिष्ठ मंत्री और विधायक उन्हें दबाने अधिकारों का अतिक्रमण करने के लिए सरकार के नाम पर प्रशासनिक आंतक फैलाने की बात करते रहे हैं। यहां तक कि रमन सरकार के पिछले कार्यकाल में गृहमंत्री ननकीराम कंवर ने मीडिया के सामने यह आईएएस आईपीएस प्रदेश को बेच खाएंगे जैसा बयान दिया था। अपनी साफगोई से उन्हें चुनाव हारना पड़ा । इतना ही नहीं पचास आईएएस अफसरों की तो जांच चल रही है। हाल ही में एक अधिकारी को उनके कारनामों के लिए निलंबित भी किया जा चुका है। आईपीएस की तो कल्लूरी से लेकर पवन देव तक के बाहुबल की एक अलग लंबी कहानी है। पावर की इस लड़ाई में ब्यूरोक्रेट्स हमेशा पावरफुल रहे हैं। सत्ता चाहे भाजपा की हो या फिर कांग्रेस की रही हो। आईएएस आईपीसएस रहे जोगी के मुख्यमंत्रित्व काल में भी आईएएस की तूती बोलती थी। जोगी मंत्रीमंडल में भूपेश बघेल भी मंत्री थे। वे दिग्विजय मंत्री मंडल में भी परिवहन मंत्री थे। दरअसल प्रशासनिक अफसरों की चाहे दबंगई की बात हो या फिर भ्रष्टाचार की उन्हें पल्लवित और पुष्पित करने वाले सियासतमंद ही होते हैं। सत्ता की पनाह में ही यह फलते फूलते हैं। भाजपा के तेरह सालों के कार्यकाल में तो उनका कद इतना बढ़ गया है कि सत्ता के वरिष्ठ मंत्री तक प्रशासनिक आतंक की बात कर उनके बाहुबल को प्रमाणित कर रहे हैं। वास्तव में लोकतंत्र में कार्यपालिका और व्यवस्थापिका के नुमाईंदे व्यवस्था संचालन में ही एक दूसरे के पूरक नहीं है बल्कि मनी पावर और मसल्स पावर के मामले में भी एक दूसरे के पूरक हैं। यानी यह एक सिक्के के दो पहलू हैं। कलेक्टर नामक यह प्राणी अंग्रेजों की देन है और आजादी के बाद से ही कलेक्टर या सचिवों के असीमित पावर को कम करने की संसद और इसके बाहर बहस चलती रही है। मगर इसे अब तक सीमित नहीं किया गया है। संविधान में यह ब्यूरोक्रेट्स लोकसेवक हैं और जनप्रतिनिधि जनसेवक हैं। मगर क्या आज यह इस गरिमामयी शब्द के मुताबिक आचरण करते हैं। क्या उनकी छवि इसी तरह है? जनता अफसरों को साहब और सर संबोधित करती है और वे खुद भी न सिर्फ यह सामंती संबोधन कहलवाने में गुरुर महसूस करते हैं, बल्कि उनकी कार्यशैली और जीवन शैली भी साहबान की तरह ही है। जनता के खून पसीने के टैक्स से तनख्वाह उठाने वाले इन नौकरशाहों का बर्ताव नवाबों की तरह है। आलीशान बंगलों और शानदार दफ्तरों में वे जनता के लिए सहज सुलभ नहीं हैं। आवाम के वोट से उनकी बेहतरी की शपथ लेकर सत्ता पर काबिज होने वाले राजनीतिकों के ठाठ बाट तो नवाबों की तरह हैं। गणतंत्र में यह जनसेवक जन से दूर होते जा रहे हैं और उनकी सारी कवायद अपनी सात पुश्तों के लिए अकूत धन उगाहने की है। यह विडंबना ही है कि नौकरशाहों को राजनीतिक ही अफसरशाह या तानाशाह बनाते हैं। इसमें सत्तापक्ष की भूमिका तो केंद्र में होती है मगर विपक्ष भी सहभागी होता है। विपक्ष भले ही सत्तापक्ष की तरह मलाईदार न हो मगर दूध मक्खन तो उसे भी मिलता है। पिछले तेरह साल में कांग्रेस के कितने नेता और उनके लोग सत्ता के नुमाईंदों की तरह ठेकेदारी या दीगर काले सफेद व्यवसाय नहीं कर रहे हैं? क्या यह काले कारनामे आईएएस के बिना नैतिक समर्थन के हो रहे हैं। आज अपनी कुर्सी और माल बनाने के लिए उन्हें बढ़ावा देने का जो काम भाजपा सरकार कर रही है, वहीं तो तेरह साल पहले कांग्रेस कर रही थी और सत्ता में आने पर भी यही करेगी। लूट और रसूक का यह सामूहिक खेल तो छत्तीसगढ़ ही नहीं बल्कि आजादी के बाद से पूरे देश में चल रहा है। इसका प्रमाण जेलों, थानों,अदालतों और जांच एजेंसियों के शिकंजे में फंसे मनी पावर और मसल्स पावर के घोटालो में फंसे हजारों लाखों अफसर और नेता हैं। बाबूलाल अग्रवाल से लेकर लालू तक कितने ही हैं। इसका मतलब यह नहीं कि आईएएस मनमानी करें और उनका विरोध विपक्ष या जनपक्ष न करे। मगर संजीदगी से सौ टके की सोचने वाली बात यह है कि सत्ता पर रहते जो जनप्रतिनिधि जिन मुद्दों का समर्थन करते हैं, विपक्ष में आते ही विरोध क्यों करने लगते हैं। जब तक हल्की सियासत और धन उगाही के लिए खुदगर्जी के सिवरेज से बाहर नहीं निकलेंगे राजनीति की गंगोत्री तक नहीं पहुंचेगे। उन्हें मैली महानदी में डुबकी लगाने की यातना सहनी ही पड़ेगी। दरअसल उन्हें इस जनता के बारे में सोचना शुरु करना चाहिए जिनके नाम पर वे राजे-रजवाड़ों सा सुख भोग रहे हैं, मगर उससे कटते जा रहे हैं। लोक को तंत्र से जोड़े बिना लोकतंत्र खोखला ही रहेगा। खोखले लोकतंत्र के नुमाईंदों को भी लोग सम्मान से नहीं स्वार्थ और डर से सम्मान देंगे। लिहाजा लोकसेवक और जनसेवक यानी नौकरशाह और जनप्रतिनिधि सकारात्मक रुप से एक दूसरे के पूरक बनें जिनका मकसद स्वहित नहीं लोकहित हो। देश और जनता के दोहन और भयादोहन का सिलसिला अब बंद होना चाहिए। वरना जागरुक जनता तो कह रही है कि सिंहासन खाली करो कि जनता आती है। क्या हुआ दिल्ली,यूपी बिहार और पंजाब में । क्या आईएएस बी एल अग्रवाल आज अपने घर में नाती पोतों के साथ खेल सकते हैं, अपने बंगले के उद्यान में उड़ती तितली की हवाबाजी का दीदार कर सकते हैं। आपका आचरण ऐसा होना चाहिए कि कुर्सी जाने के बाद भी चंद लोग आपसे बात करने में खुशी महसूस कर सकें।

वर्ल्ड फुटबाल एसोसिएशन (फीफा) ने वायु प्रदूषण के कारण वर्ल्ड कप के मैच दिल्ली में कराने का कार्यक्रम रद्द कर दिया। फैसले की घोषणा के साथ फीफा आयोजन समिति के स्थानीय निदेशक जेवियर सेप्पी ने कहा कि वह दीवाली के बाद होने वाले विश्वकप मैच दिल्ली में नहीं कराएंगे, खासतौर पर तब, जब पटाखों और पंजाब-हरियाणा के खेतों में फसल कटाई से बचे घास-फूस को जलाने से हवा में प्रदूषण जहरीला स्तर अख्तियार कर लेता है। फीफा को 17 वर्ष से कम आयु वर्ग के ये क्वार्टर फाइनल मैच दीवाली के दो दिन बाद दिल्ली में कराने थे। अब ये मैच गोवा, कोची, गुवाहाटी और कोलकाता में कराए जाएंगे। सेमीफाइनल नवी मुंबई और गुवाहाटी तथा फाइनल कोलकाता में सम्पन्न होगा। दिल्ली की हवा में प्रदूषण का स्तर बहुत खतरनाक हो जाने की यह जानकारी पहली बार सामने नहीं आई है। संतोष की बात है कि सुप्रीम कोर्ट स्वास्थ्य पर मंडरा रहे इस खतरे को बहुत गंभीरता से लेता रहा है। मार्च के अंतिम सप्ताह में दिए एक ताजे फैसले में उसने बड़ा कदम उठाते हुए प्रदूषण के मानकों को बीएस-3 से बढ़ाकर बीएस-4 कर दिया है। इससे नये आने वाले वाहनों से प्रदूषण की मात्रा में 54 प्रतिशत तक की कमी हो जाने की आशा है। हालांकि प्रदूषण मानकों को बढ़ाने का संकेत अदालत ने पिछली सुनवाई के दौरान भी दे दिया था, लेकिन वाहन निर्माता बीएस-3 मानक के ही वाहन बनाते रहे। निर्माता चाहते थे कि तैयार खड़े करीब आठ लाख वाहन बेचने का समय देने के बाद ताज़ा फैसले को लागू करने की छूट दे दी जाए क्योंकि उन्हें लगभग 12 हज़ार करोड़ का नुकसान हो जायेगा, लेकिन तब अदालत ने नागरिकों की सेहत से ज्यादा अहमियत व्यावसायिक मुनाफे को देने पर सवाल उठाते हुए उनसे पूछ ही लिया कि प्रदूषण की विकराल समस्या के प्रति आपकी सोच क्या है? क्या हवा के ज़हरीली होते जाने से खासतौर पर बच्चों और बुजुर्गों को हो रही परेशानी से आप वाकिफ नहीं हैं? यह याद दिलाने की जरूरत नहीं है कि बीते वर्ष जब दिल्ली में दीवाली के बाद हवा में जहरीले तत्वों की मात्रा स्वीकृत से बहुत ज्यादा, करीब 19 गुना हो गई और आम नागरिकों के साथ ही बच्चों-बुजुर्गों के लिए सांस लेना मुहाल हो गया तो सुप्रीम कोर्ट ने ही सख्त रुख अपनाते हुए दिल्ली प्रशासन को कड़ी फटकार लगाई थी। पर्यावरणविदों ने भी उसी वक्त तत्परता दिखाते हुए लोगों से कहा कि वे अपने बच्चों को घरों से बाहर न जाने दें और स्वयं भी सुबह टहलने जाना तक बंद कर दें। उसके बाद कई दिन स्कूलों को बंद रखने और कारों की भीड़ कम करने जैसे अस्थायी उपाय किए गए थे। फिर भी केन्द्र और राज्य सरकारों की ओर से स्थायी समाधान की दिशा में कोई कारगर योजना बनाने या विशेषज्ञों से विमर्श करके तात्कालिक उपाय करने की जरूरत नहीं समझी गई। दिल्ली में तो हवा के दूषित हो जाने की स्थिति इतनी चिंताजनक हो चुकी है कि 30 मिनट से अधिक देर तक साइकिल चलाने या जोगिग करने के खिलाफ चेतावनी जारी करनी पड़ी है। इसके बावजूद सुप्रीम कोर्ट के निर्देश केन्द्र और राज्य प्रशासन ने अन्य रुटीन मामलों की तरह ठंडे बस्ते में डाल दिए। ऐसी ही जहरीली हवा वाले शहरों में ग्वालियर और इलाहाबाद भी शामिल हो चुके हैं। इसी तरह पटना और रायपुर भी उन शहरों में शामिल हैं जहां लगातार 45 मिनट की जोगिग या साइकिलिंग सेहत के लिए घातक करार दे दी गई है। वैसे विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 2014 में ही बता दिया था कि दिल्ली दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में दर्ज हो चुकी है। यह मुकुट अकेले उसी के सिर पर नहीं सजा हुआ है। कानपुर और लुधियाना भी उतने ही प्रदूषित हैं। इन महानगरों में लगातार 60 मिनट तक साइकिलिंग या हल्की दौड़ सांस की बीमारी (अस्थमा) की वजह बन सकती है। भारतीयों में डाइबिटीज की बीमारी भी लगातार बढ़ रही है और इसकी एक वजह उनमें बढ़ता मोटापा है। लेकिन मोटापा रोकने के लिए नागरिक टहलने कहां जाएं! बढ़ते प्रदूषण की सच्चाई से सब वाकिफ हैं लेकिन समस्या की रोकथाम के लिए फौरी कदम उठाने को कोई तैयार नहीं है। कारण है, व्यावसायिक हितों को जनता के स्वास्थ्य के मुकाबले तरजीह दिया जाना। सरकार ने सुप्रीम कोर्ट और नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के उन आदेशों को अमल में ही नहीं आने दिया, जिनमें 15 और 10 वर्ष से ज्यादा पुराने डीजल से चलने वाले वाहनों पर रोक लगाने को कहा गया था। सुप्रीम कोर्ट का फैसला निश्चित रूप से नये आने वाले वाहनों से प्रदूषण में उल्लेखनीय कमी करेगा, किन्तु अभी जो वाहन वातावरण दूषित कर रहे हैं,उन पर भी पाबन्दी जरूरी है और यह तभी संभव है जब नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के आदेशानुसार पुराने ट्रकों और माल ढोने वाले दूसरे वाहनों पर तत्काल रोक लगाई जाए। अमेरिका के दो संस्थानों ने हैरान करने वाले आंकड़ों के साथ भारत को चेताया है कि 2015 में प्रदूषण के कारण देश में लगभग 11 लाख व्यक्तियों की अकाल मृत्यु हो गई। वायु प्रदूषण की स्थिति पर इसी वर्ष जारी इस रिपोर्ट के मुताबिक 2010 के बाद से भारत और पड़ोस के बांग्लादेश में प्रदूषण से हो रही अकाल मौतों का सिलसिला बढ़ता ही जा रहा है। दूसरी ओर, चीन ने ठीक समय पर उचित कदम उठाते हुए स्थिति को काफी हद तक नियंत्रण में ले लिया है। 1990 के बाद से चीन में प्रदूषण से होने वाली मौतों में बढ़ोतरी का प्रतिशत घटकर 17 रह गया है जबकि भारत में यह प्रतिशत चिंताजनक है। खेद की बात है कि अब भी हम दम घोटने वाली हवा को सांस लेने लायक बनाने के लिए गम्भीरता से नहीं सोच रहे हैं। हम आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य और विकास के बारे में आंखें मूंदकर बैठ गए हैं। बच्चे बीमार हवा में सांस लेंगे तो कैसे सेहतमंद होंगे! वे कहां खेलेंगे-कूदेंगे! हाल में केन्द्र सरकार ने वे ट्रिब्यूनल भी अधिकारविहीन बना दिए हैं जो पर्यावरण की सुरक्षा पर नजर रखते थे। कारण वे ऐसी योजनाओं को सीधे लागू नहीं होने देते थे जिनसे आबोहवा को नुकसान का खतरा दिखता था। दरअसल, उनके हस्तक्षेप पर कारपोरेट घरानों को एतराज था क्योंकि प्राकृतिक संसाधनों के मनमाने दोहन पर इस निगरानी से अंकुश लगता था। पूंजी की बढ़ती चाहत के वर्तमान दौर में यह प्रवृत्ति नए अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प की नीतियों पर भी हावी है, जिन्होंने पेरिस सम्मेलन में बनी वैश्विक सहमति के बाद बराक ओबामा के बनाए कानून को खारिज करके हवा में कार्बन की मात्रा बढ़ाने वाले उद्यमों को फिर शुरू करने का गैरजिम्मेदारी भरा आदेश पारित कर दिया है। ट्रम्प की दलील है कि उनके आदेश से ज्यादा युवकों को रोजगार मिल सकेगा। इस मामले में चीन ने अमेरिकी कदम को धता बताते हुए साफ कह दिया है कि वह समय की जरूरतों के साथ चलेगा। सुप्रीम कोर्ट ने गाड़ियों से प्रदूषण में कमी के लिए बीएस-3 के बजाय बीएस-4 लागू करके सही कदम उठाया है लेकिन यह वर्तमान में हो रहे प्रदूषण की समस्या का समाधान नहीं है। हमको और ज्यादा देर होने से पहले ही आज की परेशानी को ध्यान में रखकर कुछ और ठोस फैसले लेने होंगे।

कश्मीर की नई मुश्किल

जम्मू-कश्मीर में देश की सबसे लंबी सुरंग का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री ने राज्य के नौजवानों से अपनी ऊर्जा रचनात्मक कार्यों में लगाने की अपील की। यह सुरंग जम्मू के उधमपुर जिले को कश्मीर घाटी के रामबन जिले से जोड़ती है। प्रधानमंत्री ने अपनी यह बात उधमपुर में एक रैली को संबोधित करते हुए कही जहां के नौजवानों के साथ ऐसी कोई समस्या नहीं है। समस्या घाटी के नौजवानों के साथ है लिहाजा, अच्छा होता कि यही बात वह रामबन की किसी रैली में कहते। बहरहाल, भारतीय प्रधानमंत्री की बात पूरी दुनिया में सुनी जाती है तो कश्मीर घाटी में भी यह जरूर सुनी गई होगी। अभी का समय कश्मीर घाटी के लिए कुछ ज्यादा ही संवेदनशील है। सर्दियां शुरू होने के ठीक पहले तक पूरा इलाका हिंसक प्रदर्शनों और महीनों लंबी बंदी से गुजरा। कश्मीर विशेषज्ञों के मुताबिक सर्दियों के मौसम में अलगाववादी आराम करते हैं क्योंकि दर्रों में बर्फ भर जाने से पाकिस्तान-पोषित तत्वों का उधर से इधर आना रुक जाता है। फिर जैसा कि हर बार होता है, इस बार भी गर्मियां शुरू होते ही घाटी में पत्थरबाजी का सिलसिला शुरू हो गया है। अलबत्ता इस बार एक फर्क भी है कि फौज ने सख्ती बरतते हुए कह दिया है कि वह आतंकवादियों के खिलाफ कार्रवाई में बाधा डालने वाले आम लोगों से भी आतंकवादियों की तरह ही निपटेगी। नतीजा कि ऐसी कुछ वारदातों में आतंकियों के साथ-साथ उनके बचाव में पत्थरबाजी करने वाले भी मारे गए हैं। घाटी में सक्रिय अलगाववादी तत्वों के लिए यह लाभकारी स्थिति है। पिछले अक्टूबर-नवंबर में अपना काम-धंधा चौपट होने के चलते जो लोग ऐसे तत्वों को दरकिनार कर सरकारी ढांचे के साथ सहयोग करने लगे थे वह अभी सेना की गोली से मारे गए पत्थरबाजों के जनाजे में उमड़े पड़ रहे हैं। इसका नुकसान भारतीय सुरक्षा बलों को हो रहा है जिन्हें घाटी में चौबीसों घंटे घेरेबंदी की हालत में रहना पड़ रहा है। ध्यान रहे, पिछले दो वर्षों से, यानी केंद्र में मोदी सरकार बनने और फिर जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव में लगभग धर्म-आधारित जनादेश आने के बाद से अलगाववादियों को दिल्ली बनाम कश्मीर के साथ-साथ हिंदू बनाम मुस्लिम के पुराने लीगी मुहावरे का भी सहारा मिल गया है। हाल के अपने एक भाषण में बुजुर्ग अलगाववादी नेता अली शाह गिलानी ने यूपी और कुछ अन्य राज्यों में बीफ बैन से जुड़ी कार्रवाइयों को हिंदू जोर-जबर्दस्ती का नमूना बताते हुए जम्मू-कश्मीर के मुसलमानों से एकता की अपील की। केंद्र सरकार को समय रहते अलगाववाद और सांप्रदायिकता के इस विस्फोटक कॉम्बिनेशन की काट खोजनी होगी। इसके बिना प्रधानमंत्री अगर सिर्फ विकास के नारे से कश्मीर में शांति स्थापित कर लेने की उम्मीद बांधे हुए हैं तो उन्हें एक नजर पिछले अनुभवों पर भी डाल लेनी चाहिए।

खाना-खजाना

आवश्यक सामग्री

1 कप बेसन एक चौथाई छोटा चम्मच अजवाइन आधा कप प्याज बारीक कटा हुआ आधा कप टमाटर बारीक कटा हुआ

आधा छोटा चम्मच काली मिर्च पाउडर

1 बड़ा चम्मच धनिया पत्ती बारीक कटी हुई

2 बड़ा चम्मच कद्दूकस किया हुआ पनीर

1 बड़ा चम्मच मक्खन

1 बड़ा चम्मच हरी मिर्च बारीक कटी हुई] नमक स्वादानुसार पानी आवश्यकतानुसार

विधि

1 एक बड़े बर्तन में सभी सामग्रियों को डालें और एक साथ मिक्स कर घोल तैयार कर लें।

2 कटी हुई सामग्री थोड़ी सी अलग बचा कर रख दें।

3 धीमी आंच में एक नॉन स्टिक तवे पर थोड़ा घी डालकर एक कड़छी की सहायता से चीले के घोल को फैला लें।

4 जैसे ही चीला थोड़ा पक जाए उस पर बारीक कटी प्याज टमाटर, हरी मिर्च, धनिया पत्ती और कद्दूकस किया हुआ पनीर बुरक दें। चीले को पलट कर सुनहरा होने तक दोनों साइड से सेंक लें। बेसन पनीर चीला तैयार है। चटनी के साथ दें।

बिजनस देखें या सेफ्टी

नैशनल और स्टेट हाईवे के 500 मीटर के दायरे में आने वाले तमाम ठेकों, दुकानों, रेस्तरांओं और होटलों में शराब की बिक्री तथा सेवन बैन कर देने का सुप्रीम कोर्ट का फैसला बहुतों के गले की हड्डी बन गया है। दिल्ली, गुडगांव, मुंबई और चेन्नै के कई नामी-गिरामी होटलों, पबों में इस फैसले से सन्नाटा पसर गया है। शुरुआती रिपोर्टों के मुताबिक, सिर्फ गुडगांव के 200 बारों में बिजनेस ठप है। बार ऐंड होटलियर्स असोसिएशन के मुताबिक, इस फैसले से उनको रोज करीब 1000 करोड़ रुपये का नुकसान हो रहा है। राजस्व के इस नुकसान का असर देर-सबेर सरकारी खजाने पर भी पड़ेगा। ऐसे में नीति निर्माताओं का एक हिस्सा भी इस उधेड़बुन में लग गया है कि इस अदालती फैसले की काट क्या हो सकती है। कोशिश यह की जा रही है कि किसी तरह बड़े होटलों को इन पाबंदियों से मुक्त कर दिया जाए। इसके लिए तरह-तरह की दलीलें खोजी जा रही हैं। कहा जा रहा है कि शराब की खरीद-बिक्री अलग चीज है और ड्रिंक सर्व करना अलग।

ऐसे ही एक बात यह कही जा रही है कि कई ऐसी सड़कें भी हैं जो पहले सिटी रोड हुआ करती थीं, पर बाद में शहरों का मास्टर प्लान बदले जाने की वजह से उन्हें नैशनल या स्टेट हाईवे घोषित कर दिया गया। फैसले से कतरा कर निकल जाने का एक उपाय यह हो सकता है कि सरकारी फाइलों में इनमें से कुछ का स्टेटस बदल कर फिर से सिटी रोड जैसा ही कर दिया जाए। लेकिन सरकारों को यह नहीं भूलना चाहिए कि सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला मामले के तमाम पहलुओं पर विचार-विमर्श के बाद आया है। राजस्व की हानि का मुद्दा भी कोर्ट के संज्ञान में रहा ही होगा। ऐसे में इतने महत्वपूर्ण मसले पर देश की सर्वोच्च अदालत का फैसला आने के बाद किसी तिकड़म से उसका असर कम करने की कोशिश उचित नहीं है। अगर इस मामले में कोई नया पहलू या तथ्य सामने आता है तो उसे तय वैधानिक प्रक्रिया के जरिए कोर्ट के संज्ञान में लाया जा सकता है लेकिन मौजूदा हालात में कोर्ट के फैसले को शब्द और भावना दोनों ही स्तरों पर लागू कराना सरकारों का दायित्व है।

ब्यूटी टिप्स्

झुर्रियों करें दूर

एक चम्मच शहद में कुछ बूंदे नींबू के रस की मिलाकर चेहरे पर लगाने से चेहरे पर झुर्रियाँ नहीं पड़ती है।

चमक रखे बरकरार

एक चम्मच गुलाबजल और एक चम्मच दूध के मिश्रण में दो तीन बूंद नींबू का रस मिलाकर इसे चेहरे पर लगाने से त्वचा की कोमलता व चमक बनी रहती है।

स्क्रबिंग करें

स्क्रबिंग के लिए टमाटर का टुकड़ा लेकर चेहरे पर हल्के हाथों से मसाज करें, चेहरे की सारी गंदगी साफ हो जाएगी। त्वचा को निखारने के लिए स्क्रबिंग बहुत जरूरी है। स्क्रब त्वचा की मृत कोशिकाओं, धूल इत्यादि को हटाकर रोमछिद्रों को बंद होने से रोकता है।

शब्द सामर्थ्य

शब्द सामर्थ्य -013(Rns)

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. पदवी, विशेष लक्षण, योग्यतासूचक शब्द, नामचिह्न 5. पैर रखने का स्थान, पैर पोछने का जूट आदि का टुकड़ा 6. नगर का, नागरिक, चतुर 8. डोलना, झूलना 9. आनंद, लुत्फ 10. किताब 11. दुश्मनी, शत्रुता, वैमनस्य 12. छोर, किनारा, नाड़ी, रग 13. चौपाया प्राणी, जंतु 15. मजबूत एवं हट्टा-कट्टा, अधिक प्रबल, सशक्त 16. नकदी, धन, रोकड़ा 18. बात समझने में धोखा खा जाना 20. आहत, घायल 21. किसी शब्द को बार-बार दोहराने की क्रिया 22. टन-टन शब्द करते हुए, अच्छी अवस्था में।

ऊपर से नीचे

1. पुकारने का नाम, गौणनाम 2. लानत, भर्त्सना 3. नेत्र, आंख 4. कलाकार, 'आर्टिस्ट' 5. पालने वाला, एक भाजी 7. गणेशजी का एक नाम 8. मित्र, सखा, यार 10. आह्वान, जोर से नाम लेकर संबोधित करने की क्रिया, फरियाद 11. वैराग्य, विरक्ति 12. जुल्म, अन्याय 13. जादू का खेल दिखाने वाला 14. एक ऋतु, बसंत 16. बैलों के द्वारा कुएं आदि से पानी निकाल कर सिंचाई करने का यंत्र 17. नीच, अधम, पतित 19. बालों का गुच्छा, केश 20. लोग, प्रजा।

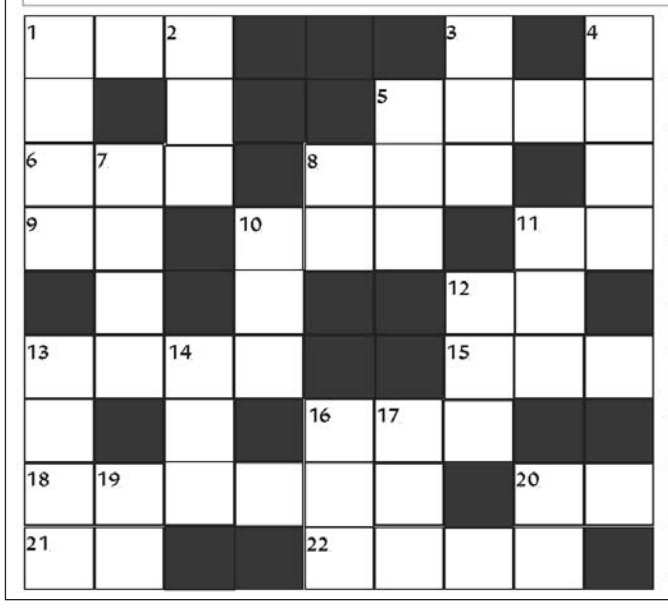

पिछले अंक का हल

हि	सा	ब	■	वि	न	य	■	प्र
म्म	■	ह	वा	ला	■	की	म	ती
त	रा	ना	■	स	मा	न	■	क्षा
■	श	■	■	■	द	■	■	■
आ	न	न	■	न	क	ल	■	म
ह	■	म	ग	ज	■	ल	लि	त
त	प	न	■	र	सि	क	■	ल
■	री	■	■	■	त	■	दा	ब
भि	क्षा	■	■	का	म	चो	र	■

सू-दोकू

सू- दोकू क्र.014(Rns)

	3		7				2	1
2				9		4		
	7		1				5	
		1		5		2		7
	5				4			
		4		1		8		5
					1			
1		5		3		9		
	2		6		5		1	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

पिछले अंक का हल

8	9	5	1	6	3	2	4	7
3	2	1	9	7	4	8	6	5
4	7	6	2	5	8	3	9	1
7	6	9	5	2	1	4	3	8
1	8	3	4	9	7	6	5	2
2	5	4	8	3	6	1	7	9
5	3	8	7	4	2	9	1	6
6	1	7	3	8	9	5	2	4
9	4	2	6	1	5	7	8	3

राशिफल

मेष (Aries): किसी भी बात से आपका मन दुखी हो सकता है और आपकी भावनाओं को ठेस पहुंच सकती है। माता के स्वास्थ्य की चिंता आपको रहेगी। विद्यार्थियों के लिए दिन मध्यम फलदायी है।

वृषभ (Taurus): आज आपकी चिंताएं कम होंगी और उत्साह बढ़ेगा। मन प्रफुल्लित रहेगा। आज आप अधिक संवेदनशीलता और भावुकता का अनुभव करेंगे। साहित्य लेखन में मन लग सकता है। आज आपको आपकी पसंद का खाना मिलेगा।

मिथुन (Gemini): आज आप थकान, व्यग्रता और प्रसन्नता का मिलाजुला अनुभव करेंगे। निर्धारित कार्यों को पूर्ण कर सकेंगे। शुभेच्छकों और मित्रों से मुलाकात का प्रसंग बन सकता है।

कर्क (Cancer): तन और मन दोनों दृष्टि से आप स्वस्थ और प्रफुल्लित रहेंगे। परिवारजन, स्नेहीजन और मित्रो से सुख-आनंद की प्राप्ति होगी। उनकी ओर से उपहार मिलेगा। प्रवास और खानपान का सुंदर आयोजन करेंगे।

सिंह (Leo): आरोग्य से सम्बंधित विषय में आप चिंतित रहेंगे। चिंता के कारण शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। व्यर्थ के वाद विवाद को टालें। कोर्ट-कचहरी के कामों को संभालकर कीजिएगा।

कन्या (Virgo): विविध क्षेत्रों से यश, कीर्ति तथा लाभ प्राप्त होगा। धनप्राप्ति के लिए आज का दिन शुभ है। विशेषकर स्त्री मित्रों से लाभ होने के संकेत हैं। प्रियजनों के साथ मिलन आनंददायी रहेगा। व्यापार में आय की वृद्धि होने की संभावना है।

तुला (Libra): नौकरी पेशा लोगों के लिए पदोन्नति के अवसर उपस्थित होंगे। पारिवारिक जीवन में हर्षोल्लास का वातावरण रहेगा। गृहस्थ जीवन में माधुर्य छाया रहेगा। उच्च पदाधिकारियों से प्रोत्साहन मिलेगा।

वृश्चिक (Scorpio): व्यवसाय में बाधा खड़ी होगी। संतान से मतभेद रहेगा। उनके स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। आज प्रतिस्पर्धियों से वाद-विवाद न करें। अनावश्यक खर्च बढ़ेगा। आज आप कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय न लें।

धनु (Sagittarius): आज कोई भी नए काम और व्याधियों के उपचार का प्रारंभ न करें। अत्यंत संवेदनशीलता के कारण आपकी मानसिक स्थिति व्याकुल रहेगी। पानी से संभलिएगा। वाणी पर संयम रखें।

मकर (Capricorn): दलाली, कमिशन, ब्याज आदि स्त्रोतों से आय बढ़ेगी, ऐसा गणेशजी कहते है। धनलाभ का प्रबल योग है। संतान के अभ्यास के विषय में चिंतित रहेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। विचारो में कुछ दुविधा और अस्थिरता रहेगी।

कुंभ (Aquarius): आज किए गए कार्यों की वजह से आप यशस्वी बनेंगे और आप की कीर्ति में वृद्धि होगी। परिवारजनों के साथ वक्त अच्छा गुजरेगा। घर का वातावरण अच्छा रहेगा। तन-मन से प्रफुल्लित रहेंगे।

मीन (Pisces): विद्योपार्जन करने वाले अच्छा प्रदर्शन कर सकेंगे। प्रणय के लिए अच्छा दिन है। पानी से आज संभलें। स्वभाव में संयम रखें। मानसिक संतुलन बनाए रखने की गणेशजी सलाह देते है।